कटाई पश्चात प्रबंधन :

- कटाई के बाद कंदों को पानी में भलीभांति धोया जाता है; उसके बाद इन्हें खुली धूप में एक या दो दिनों के लिए सुखाया जाता है।
- इसके बाद कंदों के बाहरी आवरण को मुलायम करने के लिए कंदिल जड़ों को गुनगुने पानी में एक घंटे तक रखा जाता है।
- कटी जडों के बाहरी पतले आवरण को खींचकर हाथ से छीला जाता है।
- इसके बाद इन छिले हुए कंदों को छाया में 4 से 5 घंटों तक रखा जाता है, फिर इन्हें नमी की मात्रा के अनुसार गर्म हवा में 40 डिग्री सेंटीग्रेड पर 20 मिनट तक और सुखाया जाता है।
- जड़ें भंडारण के लिए पूरी तरह से सूखी होनी चाहिए।
- यदि कंद चटकने की आवाज के साथ टूटते हैं तो इसका मतलब है कि वे पूरी तरह से सूखे हैं।
- सूखी कंद जड़ों को कार्डबोर्ड के बक्से में पैक और संग्रह करके रखा जाता है।
- उबले कंद पीले पड़ जाते हैं और बहुत अधिक बाजार मूल्य पर बिकते हैं।
- सूखी जड़ के 5–15 सेमी X 1–2 सेमी आकार के टुकड़ो को 'ए' श्रेणी किस्म के रूप में बाजार में बेचा जाता है।

पैदावार व खेती की लागत :

- छाया में सुखायी गयी कंद जड़ों की औसत पैदावार 3 टन प्रति हेक्टेयर प्रायोगिक परिस्थितियों में 20 माह पुराने पौधों से प्राप्त होती है।
- खेती की अनुमानित लागत लगभग रू. 82189 प्रति हेक्टेयर होती है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार
तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष : 011-24651825 | फैक्स : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | वेबसाइट : www.nmpb.nic.in

नोट – कृषि प्राद्योगिकी का विकास एनबीपीजीआर, पूसा कैम्पस, नई दिल्ली एनआईपीईआर (नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल एजुकेशन एंड रिसर्च), एसएएस नगर, मोहाली, पंजाब (राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो) द्वारा किया गया है।

शतावरी की खेती

सामान्य नाम : शतावरी
वानस्पतिक नाम : एस्पारेगस रेसिमोसस
कुल : लिलिएसी
उपयोगी भाग : कंद व पत्तियाँ
सामान्य उपयोग : कंद दस्त–प्रतिरोधी, मूत्रवर्धक, पोशक व कामोत्तेजक होते हैं। पौधा रक्त रोगों, गुर्दा, यकृत, गठिया, सूजाक आदि में लाभदायक है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

शतावरी

एस्पारेगस रेसिमोसस
कुल–लिलिएसी

शतावरी एक कंदिल जड़ सहित बहुवर्षीय पौधा है। ताजी जड़े चिकनी होती हैं, लेकिन सूखने पर अधोमुखी झुर्रियां विकसित हो जाती हैं। यह एक बहुवर्षीय बढ़नेवाला पौधा है जिसके फूल जुलाई से अगस्त तक प्रायः खिलते है।

जलवायु और मिट्टी :

- पौधा 600–1000 मिमी या इससे कम वार्षिक औसत वर्षा पसन्द करता है।
- बलुई–दोमट से चिकनी–दोमट मिट्टी, 6–8 पीएच सहित।

कृषिकरण सामग्री :

- बीज और शिखर कंद को कृषिकरण के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है।
- अधिक उत्पादन के कारण बीज बेहतर होते हैं जो खेती में कम अंकुरण की क्षतिपूर्ति करते हैं।
- बीज मार्च से जुलाई तक एकत्र किये जा सकते हैं।

नर्सरी तकनीकी

पौध उगानाः

- बीजों को खाद की अच्छी मात्रा से युक्त भलीभांति तैयार और उभरी नर्सरी क्यारियों में जून के पहले सप्ताह में बोया जाता है।
- क्यारियां आदर्शरूप से 10 मी. से 1 मी. के आकार में होनी चाहिए।
- बीज पंक्ति में 5–5 सेमी की दूरी में बोये जाते हैं और बालू की एक पतली परत से ढ़के जाते हैं।
- क्यारियों में रोज वाटर केन का प्रयोग करते हुए हल्का पानी नियमित अन्तराल पर दिया जाता है।
- अंकुरों को उगाने के लिए एक हेक्टेयर फसल के लिए लगभग 7 किग्रा बीजों की आवश्यकता होती है।
- शीघ्र और अधिक अंकुरण प्रतिशत को प्राप्त करने के लिए बीजावरण को मुलायम बनाने हेतु पानी या गौमूत्र में पहले से भिगोने की आवश्यकता होती है।
- बीज बोने के 20 दिन के बाद अंकुरण प्रारम्भ होता है और 30 दिनों में पूरा हो जाता है।

खेत में रोपाई

भूमि की तैयारी और उर्वरक प्रयोग :

- भूमि को गहरे हल से जोतना चाहिए और फिर उसे समतल करना चाहिए।
- भूमि में मेड़ और कुंड़ लगभग 45 सेमी की दूरी पर बनाये जाते हैं।
- लगभग 10 टन खाद को रोपण से एक माह पहले मिट्टी में अच्छी तरह से मिलाते हैं।
- एक तिहाई नाइट्रोजन और फास्फेट तथा पोटाश की पूर्ण खुराक रोपाई से पहले पंक्तियों में 10–12 सेमी तक की गहराई में डालनी चाहिए।

रोपाईः

- पौध बीज बोने के 45 दिनों बाद रोपाई के लिए तैयार हो जाती है तथा जुलाई में मानसून के प्रारम्भ में खेत में रोपे जा सकते है।

अन्तर फसल प्रणालीः

- शतावरी सामान्यतः एकफसल के रूप में उगायी जाती है लेकिन इसको कम प्रकाश वाले बागों में फलों के पेड़ो के साथ भी उगाया जा सकता है।
- पौधों को सहारे की आवश्यकता होती है अतः खम्भे या झाड़ियां सहारे का काम करती हैं।

निराई तथा गोराई :

- बची हुई दो तिहाई नाईट्रोजन को दो बराबर मात्राओं में सितम्बर और फरवरी के अन्त में मेड़ों पर प्रयोग किया जाता है।
- उर्वरक पंक्तियों के बीच में छितराया जाता है और मिट्टी में मिलाया जाता है तथा उसके बाद सिंचाई की जाती है।
- खेत को खरपतवार से मुक्त रखने के लिए निराई व गोड़ाई क्रियायें आवश्यक हैं।

सिंचाईः

- पौधं को खेत में जमाने के लिए रोपाई के तुरन्त बाद एक बार सिंचाई अवश्य करनी चाहिए।
- दूसरी सिंचाई 7 दिनों बाद की जाती है।
- यदि 15 से अधिक दिनों तक कोई वर्षा या सूखे का दौर रहता है तो एक और बार सिंचाई करनी चाहिए।

रोग व कीट नियंत्रणः

- कोई गंभीर कीट परजीवी या रोग इस फसल में नहीं देखा गया है।

फसल कटाई प्रबंधन

फसल परिपक्वता और फसल कटाई :

- रबी मौसम अर्थात नवम्बर –दिसम्बर कंदिल जड़ों को काटने के लिए सर्वोत्तम समय है।
- फसल जब 12 महीनों में काटी जाती है तो पैदावार लगभग 4–5 टन /हेक्टेयर होती है जबकि 20 माह के बाद काटने पर 35 किलो/हेक्टेयर बीजों के साथ पैदावार लगभग 6 टन/हेक्टेयर होती है।